बरेली, सोमवार
2 जून 2025
नगर संस्करण

दैनिक जागरण inext

PAGE NO: 4 BOTTOM

...तब कहीं जाके थोड़ा सुकूं पाती है मां

शायरों ने इश्क-मुहब्बत के साथ मानवीय पहलुओं पर पढ़े कलाम

bareilly@inext.co.in

BAREILLY (1 June): श्रीराम मूर्ति स्मारक रिद्धिमा में रविवार को मुशायिरे की शाम बज्म ए सुखन का आयोजन हुआ. इसमें बरेली और आसपास के शायरों ने अपने कलाम से इश्क और मुहब्बत का तो जिक्र किया ही, अपने शेर में बच्चों की जिम्मेदारियां पूरा करते बूढ़े होते मां-बाप के अनछुई व्यथा का भी जिक्र किया.

मुशायिरे के दौरान मौजूद रहे कलाकार.

सुनाए कलाम

कार्यक्रम का आगाज शायर मोहम्मद मुदस्सर हुसैन उर्फ गुलरेज तुराबी ने अपने कलाम 'वो घबराता है क्यूं खंजर नहीं है, अकेला ही तो हूं लश्कर नहीं है से किया. उन्होंने शेर तुझे जो इम्तहां लेना है लेले मेरा भी हौसला कमतर नहीं है' से खूब तालियां बटोरीं. शायर हाली अब्बास जैदी उर्फ हानी बरेलवी ने शेर 'देर तक उंगलियां निहारूं मैं, तेरी जुल्फों को जब संवारूं मैं' से अपना कलाम शुरू किया. जिसके अंत में उन्होंने 'मैं किसी को बुरा कहूं कैसे, पहले खुद को सुधारूं मैं' शेर से किया. आसिफ हुसैन रिजवी उर्फ शायर समीर भाई ने बच्चों को पालने की जिम्मेदारियां पूरी करते करते बुजुर्ग होते मां-बाप की दुश्वारियों का जिक्र किया. उन्होंने इसके लिए प्रोफ़ेसर हुसैन अनसारीयान का कलाम पढ़ा. जिसमें पहला शेर मौत के आगोश में थक के सो जाती है मां, तब कहीं जाके थोड़ा सुकूं पाती है मां' और अंतिम शेर बाद मर जाने के फिर बेटे की ख़िदमत के लिए,